आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 3/सितंबर 2026

Received: 15/09/2026; Revised: 26/09/2026; Accepted: 28/09/2026; Published: 10/10/2026

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्र चेतना

डॉ. भूमरे.पी.एम

सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष ,

श्रीमधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय .,

शंकरनगर ,तहबिलोली -, जिनांदेड -.

oEmail - bhumare1984@gmail.com

भ्रमणध्वनि -9881641369

डॉ. भूमरे.पी.एम, माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्र चेतना, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक3/सितंबर 2026**, (325 -330)

https://doi.org/10.5281/zenodo.23924553

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

शोधसार -

माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य के ऐसे राष्ट्रवादी कवि हैं ।जिनकी रचनाओं में देशप्रेम, स्वतंत्रता की आकांक्षा और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना अत्यधिक प्रभावशाली रूप में व्यक्त हुई है। उनकी कविता में राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा नहीं बल्कि एक जीवन्त मातृभूमि के रूप में स्थापित है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीयों में राष्ट्रीय स्वाभिमान, त्याग, साहस और एकता की भावना जागृत करने का प्रयास किया। चतुर्वेदी जी की प्रसिद्ध कविता पुष्प की अभिलाषा में राष्ट्र के लिए बलिदान की उत्कट भावना दिखाई देती है। वे चाहते हैं कि, उनका जीवन व्यक्तिगत सुख सुविधाओं में न बीते , बल्कि मातृभूमि की सेवा में समर्पित हो। सिपाही, निशस्त्र सेनानी, मुक्त गगन है मुक्त पवन है, कैदी

और कोकिल, अमर राष्ट्र जैसी प्रतिनिधिक कविताओं में गुलामी के प्रति विद्रोह तथा स्वतंत्र भारत की कल्पना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वे युवाओं को देश के लिए त्याग और संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। उनकी राष्ट्रीय चेतना जनमानस को जागृत करने वाली तथा देश के प्रति कर्तव्य बोध उत्पन्न करने वाली थी। इस प्रकार माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की भावनाओं का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है और आज भी हमें राष्ट्रप्रेम, त्याग तथा देश सेवा की प्रेरणा देता है।

बीज शब्द - राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय चेतना, स्वाधीनता आंदोलन, समर्पण की भावना, मातृभूमि के लिए बलिदान, राष्ट्र की सेवा, राष्ट्र निर्माण, क्रांतिकारी।

प्रस्तावना -

माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवी,पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी थे ।उनका काव्य देशप्रेम, त्याग, बलिदान और स्वतंत्रता की भावना से ओत प्रोत है। - उन्होंने अपनी रचनाओ के माध्यम से भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना और मातृभूमी के प्रति समर्पण की भावना जागृत की। उनकी कविताओं में राष्ट्र के प्रति प्रेम केवल भावनात्मक रूप में ही नही बल्कि देश के लिए त्याग और बलिदान की प्रेरणा के रूप में भी व्यक्त हुआ है।माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य के प्रमुख राष्ट्रवादी कवि थे ।उनके काव्य में देशप्रेम, स्वतंत्रता की आकांक्षा, त्याग, बलिदान और मातृभूमी के प्रति समर्पण की भावना अत्यंत प्रभावशाली रूप में दिखाई देती है। वे केवल देश की सुंदरता का वर्णन नही करते बल्की देशवासियों में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की चेतना भी जगाते है। इसी कारण उन्हें एक सच्चे देशभक्त के नाम से भी पहचाना जाता है ।उनके काव्य में राष्ट्रभक्ती का स्वर अत्यंत ओजपूर्ण, प्रेरणादायक और प्रभावशाली है ।

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्र चेतना

माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवी, लेखक, पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी थे। ।उनका जन्म 04 अप्रैल 1889 को मध्यप्रदेश के बाबई वर्तमान माखननगर में हुआ था।वे राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ती भाव से ओत प्रोत रचनाओं के -लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और कई बार जेल भी गये। उनकी प्रमुख रचनाओं में हिमतरंगिनी, हिमकीरिटीनी, युगचरण और समर्पण शामिल है। उनकी प्रसिद्ध कविता पुष्प की अभिलाषा में देश के लिए त्याग और बलिदान की भावना अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त हुई है। माखनलाल चतुर्वेदी की भाषा ओजपूर्ण, सरल और भावनात्मक है ।उनके साहित्य में राष्ट्रप्रेम, स्वतंत्रता, त्याग, बलिदान और मानवता के भाव प्रमुख है। ऐसे राष्ट्रकवि की मृत्यू 30 जनवरी 1968 को हुई। डॉकमलाकांत पाठक कहते हैं कि., चतुर्वेदी जी की आकुंठित बलिदान भावना परतंत्रता और स्वतंत्रता के तथा लोक कल्याण और सीमा सुरक्षा के विविध घटना प्रसंगों या वस्तु स्थितियों में समान रूप से प्रखर समुन्नत और अनखिल रही है। उन्होंने समझौते और समझदारी को महत्व न देकर संकल्प, कर्तव्य और त्याग को श्रेयस्कर समझा है।"1माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना और देशप्रेम का सशक्त स्वर है। उनके काव्य में राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय चेतना, त्याग एवं बलिदान की भावना जैसी प्रभावशाली स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना निम्नलिखित रूप से अभिव्यक्त होती है।

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में देशप्रेम, राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख आधार है। उनके लिए मातृभूमि केवल भूमि का एक टुकड़ा नहीं बल्कि श्रद्धा और और गौरव का प्रतीक है। वे भारतीयों के मन में देश के प्रति सम्मान और समर्पण की भावना जगाते हैं। उनकी प्रसिद्ध कविता पुष्प की अभिलाषा में देशप्रेम

अत्यंत मार्मिक रूप में व्यक्त हुआ है। एक फूल इच्छा व्यक्त करता है कि, वह किसी राजा के वैभव को बढ़ाने या प्रेमिका के श्रृंगार में सजने के बजाय मातृभूमि के लिए बलिदान देने वाले वीरों के पथ में बिखरना चाहता है ।इससे स्पष्ट होता है कि, कवि के लिए व्यक्तिगत सुख और सौंदर्य से कहीं अधिक महत्वपूर्ण राष्ट्र की सेवा है। जैसे,

"चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं, प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं -"।2

चतुर्वेदी के काव्य में देशप्रेम केवल भावुकता नहीं बल्कि कर्तव्य ,त्याग और बलिदान की प्रेरणा भी है । वे युवाओं को राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए आगे आने तथा आवश्यकता पड़ने पर अपना सर्वस्व अर्पित करने का संदेश देते हैं। जैसे,

मन की घुंडी खोल,जल, थल,नभ हिल डुल जाने दे -,
तू किंचित मत डोलदे हथियार या कि !,
मत दे तू पर तू कर हुंकार।"3

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का देशप्रेम मातृभूमि के प्रति श्रद्धा, राष्ट्रीय गौरव ,स्वतंत्रता की आकांक्षा और राष्ट्र के लिए त्याग की भावना से निर्मित है । यही उनकी राष्ट्रीय चेतना को प्रभावशाली और प्रेरणादायक बनाता है। मातृभूमि के संस्कारों से ही व्यक्तित्व निर्माण होता है। मिट्टी, जल और वायु से ही देशभक्ति का सृजन होता है। अर्थात राष्ट्र चेतना का महत्वपूर्ण घटक मातृभूमि होती है। माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में भारत भूमि केवल जन्मभूमि नहीं बल्कि पूजनीय माता के समान है। कवि स्वयं को राष्ट्र के प्रति पूर्णतः समर्पित मानते हैं और देश की स्वतंत्रता तथा सम्मान के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने की प्रेरणा देते हैं। उनकी प्रसिद्ध कविता पुष्प की अभिलाषा में यह भावना अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त हुई है । जैसे,

"मुझे तोड़ लेना वनमाली ,उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक"।4

कवि मातृभूमि के लिए मर मिटने की बात करते हैं। मातृभूमि की रक्षा करते समय अगर मृत्यु भी आए तो उन्हें सहर्ष स्वीकार है। वे उस पथ पर जाना चाहते हैं, जिस पथ पर भारत माता की रक्षा के लिए अनेक वीरों ने अपनी कुर्बानी दी है। चतुर्वेदी का मातृभूमि के प्रति पूर्ण समर्पण, सम्मान और जीवन तक का त्याग करने का संदेश मिलता है। उनका समर्पण निष्क्रिय भावुकता नहीं बल्कि संघर्ष करने की चेतना भी है। वे युवाओं में देश के प्रति कर्तव्यबोध और त्याग की भावना उत्पन्न करना चाहते हैं। जैसे,

"देश ? यह प्रियतम भारत देश, सदा पशुबल से जो बेहाल। -
वेश? यदि वृंदावन में रहे, कहा जावे प्यारा गोपाल।"5

उनकी कविताओं में सभी प्राणी, जीवों के प्रति भी दया, करुणा का भाव व्यक्त होता है। जिस प्रकार अंग्रेज भारतीय लोगों पर जुल्म ढोते रहे हैं, उसी प्रकार पशुओं पर भी नाना प्रकार के अत्याचार होते रहे हैं। चतुर्वेदी की कविताओं में सभी जीवों को जीने के अधिकारों का सम्मान किया गया है। भारत भूमि सभी जीवों के लिए प्रिय रही है और सभी भारत की रक्षा के लिए मिलजुल कर संकल्प कर लेते हैं। अर्थात माखनलाल जी के काव्य में मातृभूमि के प्रति समर्पण, देशभक्ति और बलिदान की भावना अभिव्यक्त होती है। माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में पराधीनता का दुख और स्वतंत्रता की आकांक्षा राष्ट्र चेतना का एक प्रमुख स्वर उभर कर आया है। वे विदेशी दासता को

राष्ट्र के विकास में सबसे बड़ी बाधा मानते हैं और भारत को स्वतंत्र देखने की तीव्र इच्छा व्यक्त करते हैं। उनके काव्य में स्वतंत्रता केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान और आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना का प्रतीक है। चतुर्वेदी की कविताओं में पराधीन भारत की पीड़ा और स्वतंत्रता प्राप्त करने की बेचैनी स्पष्ट दिखाई देती है। वे भारतीय युवाओं को जागृत होकर देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने तथा अपने प्राणों तक का बलिदान देने के लिए प्रेरित करते हैं।उनकी कविताओं में क्रांति ,संघर्ष, साहस और त्याग के स्वर इसी स्वतंत्र चेतना को मजबूत करते हैं। जैसे,

"टूटी नहीं कि लगा अभी तक उपनिवेश का दाग
बोल तिरंगे तुझे उड़ाऊ या कि जगाऊं आग?
उठ रणराते, ओ बलखाते, विजयी भारतवर्ष, नक्षत्रों पर बैठे पूर्वज माप रहे उत्कर्ष।
को पूरब के प्रलयी पंथी, वह जग के सेनानी,
होने दे भूकंप की तूने, आज भृकुटियां तानी।"6

प्रस्तुत कविता में तत्कालीन स्वतंत्रता आंदोलन से भावनाएं गहराईयों से जुड़ी है। वे जनता में राष्ट्रीय जागरण उत्पन्न करके उस विदेशी शासन के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा देते हैं। उनकी अन्य कविता में भी इसी प्रकार का संदेश दिया गया है। उस समय के अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध जन संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए कवि ने ऐसी पंक्तियों का प्रयोग किया है। जैसे ,

"क्या ? देख ना सकती जंजीरों का पहना? हथकड़ियां क्यों? यह ब्रिटिश राज का गाना!
कोल्हू का चर्रक चूं? जीवन की तान ,गिट्टी पर अंगुलियों ने लिक्खे गान।
हूं मोट खींचता लगा पेट पर जुआ, खाली करता हूं ब्रिटिश अकड़ का कुआं।"7

माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में राष्ट्रीय जागरण उत्पन्न करके उस विदेशी शासन की विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार उनकी स्वतंत्रता की आकांक्षा व्यक्तिगत इच्छा न होकर समूचे राष्ट्र के लिए प्रेरणादायक शक्ति बनती है। माखनलाल चतुर्वेदी की कविताएं केवल स्वतंत्रता और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना को ही व्यक्त नहीं करती बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान और जन जागरण करने का कार्य भी करती है। वे भारतीयों के भीतर अपनी मातृभूमि, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति गौरव और आत्मसम्मान की भावना उत्पन्न करना चाहते थे। उनके काव्य में पराधीनता के प्रति असंतोष तथा स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण की प्रेरणा स्पष्ट दिखाई देती है। वे उदासीन भारतीय जनता में चेतना जगाने का प्रयास करते हैं । भारत भूमि पर अनेक वीर महापुरुष हुए हैं। उनके बलिदान को स्मरण करने तथा उनसे प्रेरणा लेकर भारतीयों को क्रांति का आवाहन करते हैं। जैसे,

"क्या तुमको है कुरुक्षेत्र हल्दीघाटी की याद !
सिर पर प्रलय,नेत्र में मस्ती, मुट्ठी में मनचाही,
लक्ष्य मात्र मेरा प्रियतम है, मैं हूं एक सिपाही।"8

प्रस्तुत कविता में कवि जनता को लक्ष्य प्राप्ति करने का आवाहन करते हैं। अपने देश के लिए कभी भी समर्पण,त्याग और बलिदान देने की जरूरत होती है तब पीछे नहीं हटना चाहिए। कई सारे लालच को त्याग कर अपने देश के लिए मरमिटने का कवि ने संदेश दिया है ।यह आजादी हमें बरकरार रखने के लिए सभी - प्रकार के मोह, लालच को त्यागकर राष्ट्र निर्माण में सहायक बनने का संदेश देते हैं। अमर राष्ट्र नामक कविता में कवि कहते हैं कि,

"मैं न सहूंगा मुकुट और -, सिंहासन ने वह मूंछ,
मरोरी, जाने दे, सिर लेकर, मुझको, ले संभाल यह लोटाडोरी। -"9

कवि अपना तनमन- मातृभूमि के लिए समर्पित करना चाहते हैं। उन्हें किसी भी प्रकार की चिंता सताती नहीं है। केवल उनका सपना है कि, देश को आजादी दिलाएं और पराधीनता से मुक्त करें। इसलिए कवि किसी भी हद तक जाने को तैयार है। कई ऐसे नेता तथा क्रांतिकारी देशभक्त भी होते हैं। जैसा ही उन्हें कुछ सम्मान मिलता है तो वे आत्मप्रशंसा होते ही आनंदित हो जाते हैं। अर्थात इंसान को आत्मस्तुति प्रिय होती है ।परंतु झूठी प्रशंसा या झूठा सम्मान इसका अस्तित्व क्षणभंगुर होता है। सच्चे देशभक्त कभी भी अपनी स्तुति नहीं सुनते। वें दूसरों को गौरव दिलाने में योगदान देते हैं। राष्ट्रकवि ऐसे नकली सम्मान और ईमान से दूर रहने का संदेश देते हैं। माखनलाल चतुर्वेदी सिपाही नामक कविता में ऐसे ही खरीदे हुए सम्मान से दूर रहने का संदेश देते हैं। जैसे ,

"गिनो न मेरी श्वास, छुए क्यों मुझे विपुल सम्मान
भूलो ऐ इतिहास, खरीदे हुए विश्व विमान ।"10

भारत राष्ट्र में अनेक वीर महापुरुष हुए। यह धरती वीरों की रही है। उसका हमेशा स्मरण करने का संदेश कवि ने दिया है। ब्रिटिश राज में भारतीयों पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार हुए हैं ।जिसका जिक्र चतुर्वेदी की कविता में हुआ है। कवि ने अंग्रेजों के शासन काल में जो दमनकारी नीतियां अपनाई गई उसका डटकर विरोध किया है। साथ ही भारत के जनज-न को ब्रिटिश राज के काले कारनामों के बारे में सतर्कतापूर्वक मुकाबला करने का आवाहन किया है। भारत की भोली रतापूर्ण दुष्कर्मों को पहचानने में नाकाम रही है। अंग्रेजों की छल भाली जनता अंग्रेजों के इस बर्ब - कपट नीति का पर्दाफाश कवियों ने कविताओं के माध्यम से, प्रतीक रूप में समझाया है। जैसे,

"कोकिल, बोलो तो काली तू !,रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली।"11

मैथिलीशरण गुप्त जी की समस्त कविता भारतीय जनता को राष्ट्रीय स्वाभिमान और आत्म गौरव प्रदान करती है। साथ ही जन जागरण, स्वतंत्रता और संघर्ष के लिए प्रेरणा देती है। यह उनकी कविता की प्रमुख विशेषता रही है और इस कारण उनकी राष्ट्रीय चेतना को व्यापक और प्रभावशाली बनाते हैं।

निष्कर्ष -

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम, स्वतंत्रता, त्याग, बलिदान और राष्ट्रीय स्वाभिमान के रूप में अभिव्यक्त हुई है। उनका काव्य स्वतंत्रता पूर्व भारत की संघर्षशील चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने अपनी ओजस्वी भाषा और भावनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से भारतीयों में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना उत्पन्न की। इसलिए उन्हें राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख कवियों में स्थान मिला है। माखनलाल चतुर्वेदी की समस्त कविताओं में मातृभूमि के प्रति समर्पण, देशभक्ति, त्याग और बलिदान की भावना अभिव्यक्त होती है।

संदर्भ सूचि-

1. माखनलाल चतुर्वेदीकाव् :य एवं दर्शन - डॉदिनेश चंद्र व .मा,चिंतन प्रकाशन कानपुर -2016, पृष्ठ क्रमांक -71
2. एनसीईआरटी संस्करण -2022 रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी, पुष्प की अभिलाषा पुस्तक मल्हार - प्रकाशन-,पृष्ठ क्रमांक -12

3.माखनलाल चतुर्वेदी रचनावाली संपादक श्रीकांत जोशी -, प्रकाशन वर्ष - 2011, वाणी,प्रकाशन, पृष्ठ क्रमांक -710
4. एनसीईआरटी संस्करण -2022,रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी,पुष्प की अभिलाषा पुस्तक मल्हार प्रकाशन-,पृष्ठ क्रमांक -25
5.माखनलाल चतुर्वेदी रचनावाली , 2011,संपादक श्रीकांत जोशी - ,वाणी,प्रकाशन, पृष्ठ क्रमांक - 740
6. माखनलाल चतुर्वेदी रचनावाली , 2011,संपादक श्रीकांत जोशी - , वाणी,प्रकाशन, पृष्ठ क्रमांक - 751
7. माखनलाल चतुर्वेदी रचनावाली , 2011,संपादक श्रीकांत जोशी - , वाणी,प्रकाशन, पृष्ठ क्रमांक - 760
8. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, प्रकाशन वर्ष - 2011, अशोक . सुरेश आगरावाल .लेखक डा - प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक -174
.9. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, प्रकाशन वर्ष - 2011, अशोक . सुरेश आगरावाल .लेखक डा - प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक -183
10. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, प्रकाशन वर्ष - 2011, अशोक . सुरेश आगरावाल .लेखक डा - प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक -188
11. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, प्रकाशन वर्ष - 2011, अशोक . सुरेश आगरावाल .लेखक डा - प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक -190

****